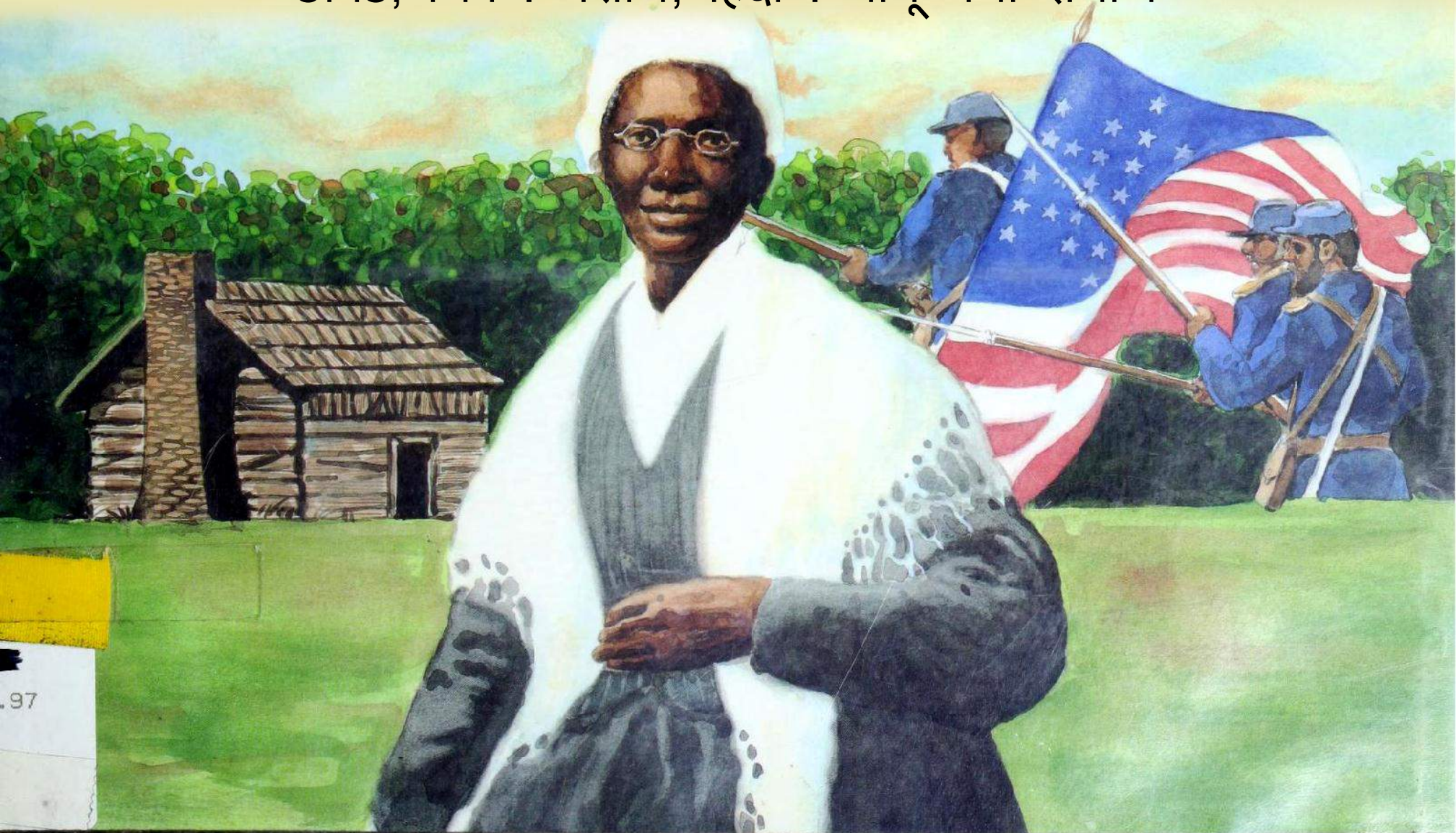


सोजॉरनर दूथ

डेविड, चित्र : गेशॉम, हिंदी : मीनू नेगी रौथाण



सोजॉरनर दूथ

डेविड, चित्र : गेशॉम, हिंदी : मीनू नेगी रौथाण







And the Lord said to Abraham, "I am God, the Most High."

"I am God, the Most High," said the Lord to Abraham.

And the Lord said to Abraham, "I am God, the Most High."

"I am God, the Most High," said the Lord to Abraham.

And the Lord said to Abraham, "I am God, the Most High."

"I am God, the Most High," said the Lord to Abraham.

And the Lord said to Abraham, "I am God, the Most High."

"I am God, the Most High," said the Lord to Abraham.

And the Lord said to Abraham, "I am God, the Most High."

"I am God, the Most High," said the Lord to Abraham.

And the Lord said to Abraham, "I am God, the Most High."

"I am God, the Most High," said the Lord to Abraham.

And the Lord said to Abraham, "I am God, the Most High."

"I am God, the Most High," said the Lord to Abraham.

And the Lord said to Abraham, "I am God, the Most High."

"I am God, the Most High," said the Lord to Abraham.

And the Lord said to Abraham, "I am God, the Most High."

"I am God, the Most High," said the Lord to Abraham.

And the Lord said to Abraham, "I am God, the Most High."

"I am God, the Most High," said the Lord to Abraham.

And the Lord said to Abraham, "I am God, the Most High."

"I am God, the Most High," said the Lord to Abraham.

And the Lord said to Abraham, "I am God, the Most High."

"I am God, the Most High," said the Lord to Abraham.

And the Lord said to Abraham, "I am God, the Most High."

"I am God, the Most High," said the Lord to Abraham.

And the Lord said to Abraham, "I am God, the Most High."

"I am God, the Most High," said the Lord to Abraham.

And the Lord said to Abraham, "I am God, the Most High."

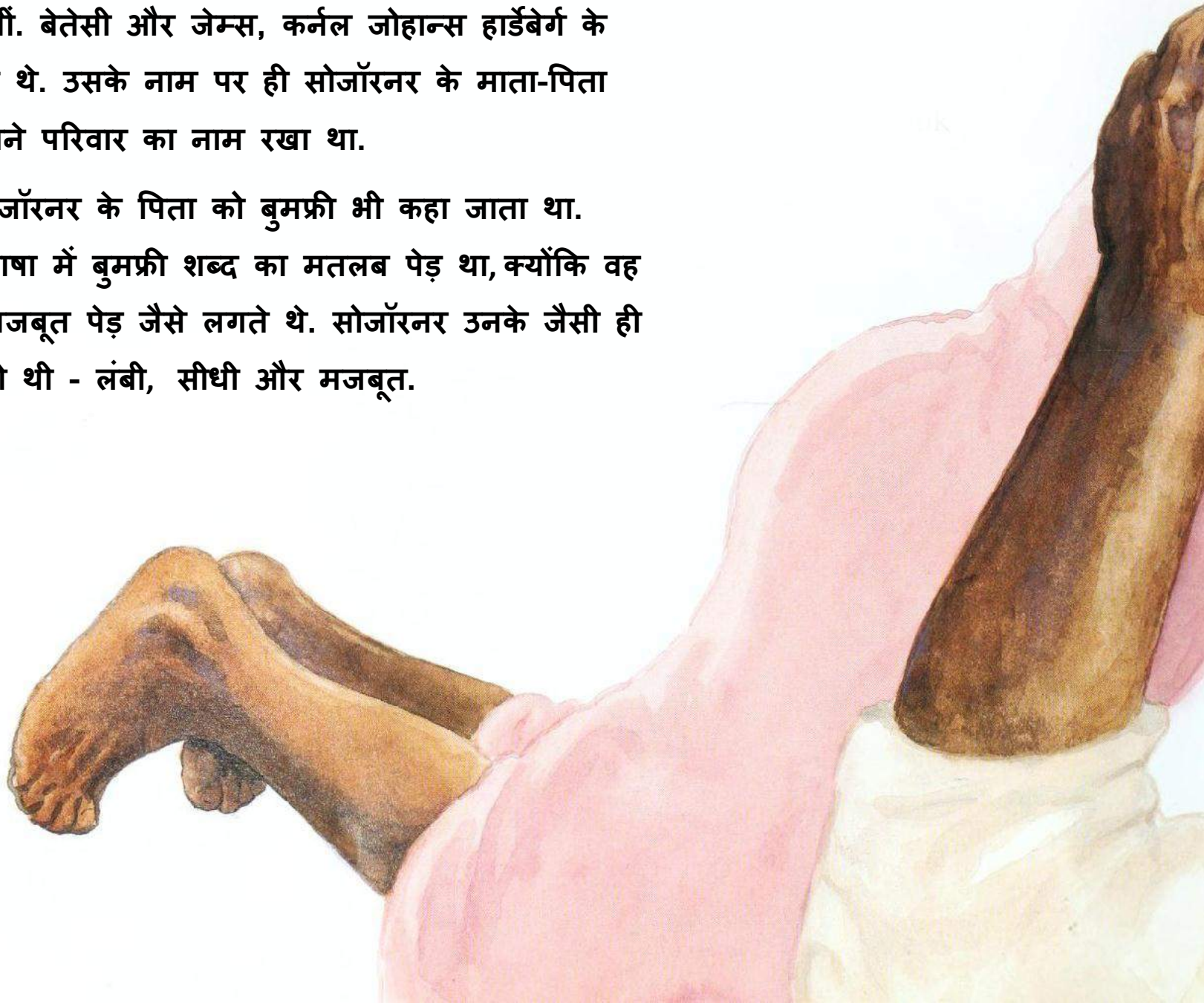
"I am God, the Most High," said the Lord to Abraham.

And the Lord said to Abraham, "I am God, the Most High."



सोजॉरनर डुथ का जन्म 1797 में न्यूयॉर्क के हर्ली में हुआ था. वह गुलाम - बेतेसी और जेम्स हार्डेबेर्ग की बेटी थीं. बेतेसी और जेम्स, कर्नल जोहान्स हार्डेबेर्ग के गुलाम थे. उसके नाम पर ही सोजॉरनर के माता-पिता ने अपने परिवार का नाम रखा था.

सोजॉरनर के पिता को बुमफ्री भी कहा जाता था. डच भाषा में बुमफ्री शब्द का मतलब पेड़ था, क्योंकि वह एक मजबूत पेड़ जैसे लगते थे. सोजॉरनर उनके जैसी ही दिखती थी - लंबी, सीधी और मजबूत.

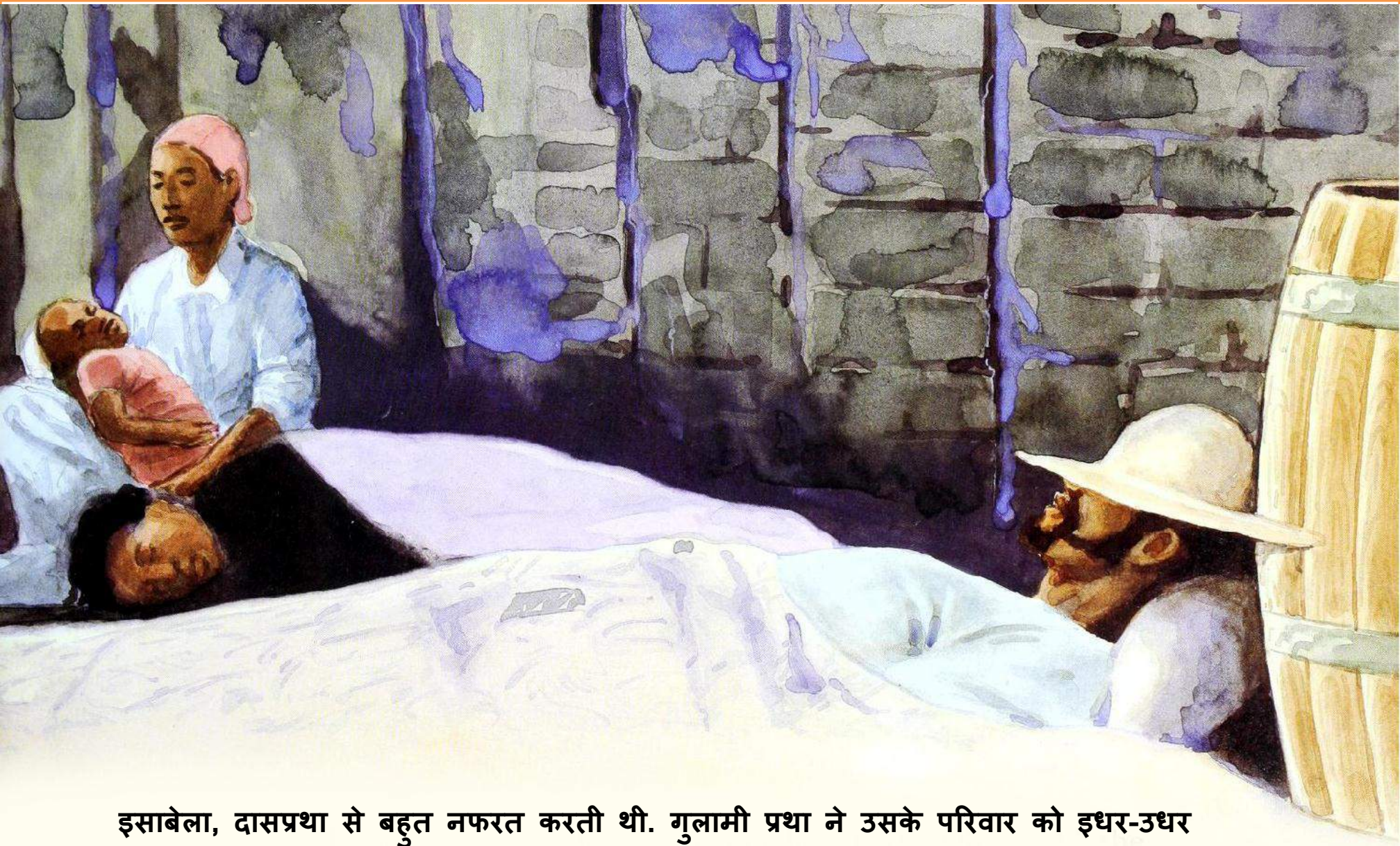




जब सोजॉरनर पैदा हुई तब उसके माता-पिता ने उसे इसाबेला नाम दिया. वे उन्हें प्यार से बेला बुलाते थे. कई सालों बाद जब वह एक स्वतंत्र महिला बनीं, तब उन्होंने खुद को **सोजॉरनर डूथ** का नाम दिया.

इसाबेला के कई भाई और बहनें थीं, लेकिन उनमें से ज्यादातर को व्यापारियों को गुलामों जैसे बेंच दिया गया था. इसाबेला के जन्म से पहले ही वे कहीं दूर जा चुके थे. कभी-कभी रात में उसकी मां जब आकाश की ओर देखतीं तब वो उदास और दुखी मन से इसाबेला को बतातीं, “ये वही तारे हैं, और वही चाँद है, जो तुम्हारे भाईयों और बहनों को भी दिखते होंगे पर फिर भी वे सभी एक-दूसरे से बहुत दूर हैं.”





इसाबेला, दासप्रथा से बहुत नफरत करती थी. गुलामी प्रथा ने उसके परिवार को इधर-उधर बिखरा दिया था. उसने कई सालों बाद यह कहा, “हे भगवान, दासप्रथा कितनी बुरी चीज़ है इसके इतने भयानक परिणाम भी हो सकते हैं?”

जब इसाबेला तीन वर्ष की थी तब जॉन्स हार्डेबेर्ग का निधन हो गया. उसका बेटा, चार्ल्स, उनका नया मालिक बना. इसाबेला, उसके माता-पिता, और छोटा भाई पीटर, चार्ल्स हार्डेबेर्ग के घर के तहखाने के ठंडे, सीलन वाले एक-कमरे में अन्य दासों के साथ रहते थे.



When Isabella was nine, she was taken from her family and brother.

जब इसाबेला नौ वर्ष की थी तब उसे अपने परिवार और भाई से अलग कर दिया गया. उसे मिस्टर और मिसेज जॉन नेल्स को एक गुलाम के रूप में बेंच दिया गया. वे उसे बहुत मारते थे. इसाबेला की माँ उसे प्रार्थना और भगवान पर विश्वास करना सिखाती थी. इसाबेला प्रार्थना में नेल्स से सुरक्षा की भीख माँगती थी. दो साल बाद, इसाबेला को एक मछुआरे और सराए के मालिक - मार्टिन श्राइवर को बेंच दिया गया. डेढ़ साल बाद उसे जॉन डोमोंट्स को बेंच दिया गया.

इसाबेला, डोमोंट्स के लिए कड़ी मेहनत करती थी. उसके मालिक ने अपने दोस्तों को कहा, “कि वो पूरे परिवार के कपड़े धोने का काम रात को करती है और सुबह खेतों में काम करती है. वहाँ वो समेटने व बाँधने के काम करती है.”

जिन दिनों इसाबेला डोमोंट्स के यहाँ काम करती थी तब वो वहाँ रॉबर्ट से मिली. वह भी एक दास था जो की पास के खेतों में काम करता था. इसाबेला, रॉबर्ट्स से प्यार करती थी. एक दिन उसके मालिक और उसके बेटे ने रॉबर्ट को इसाबेला से मिलते हुए देखा. उन्होंने रॉबर्ट को छड़ी से बहुत मारा और उसे गंभीर रूप से घायल किया और फिर उसे बांधकर कहीं दूर ले गए. उसके बाद रॉबर्ट कभी वापस नहीं आया.

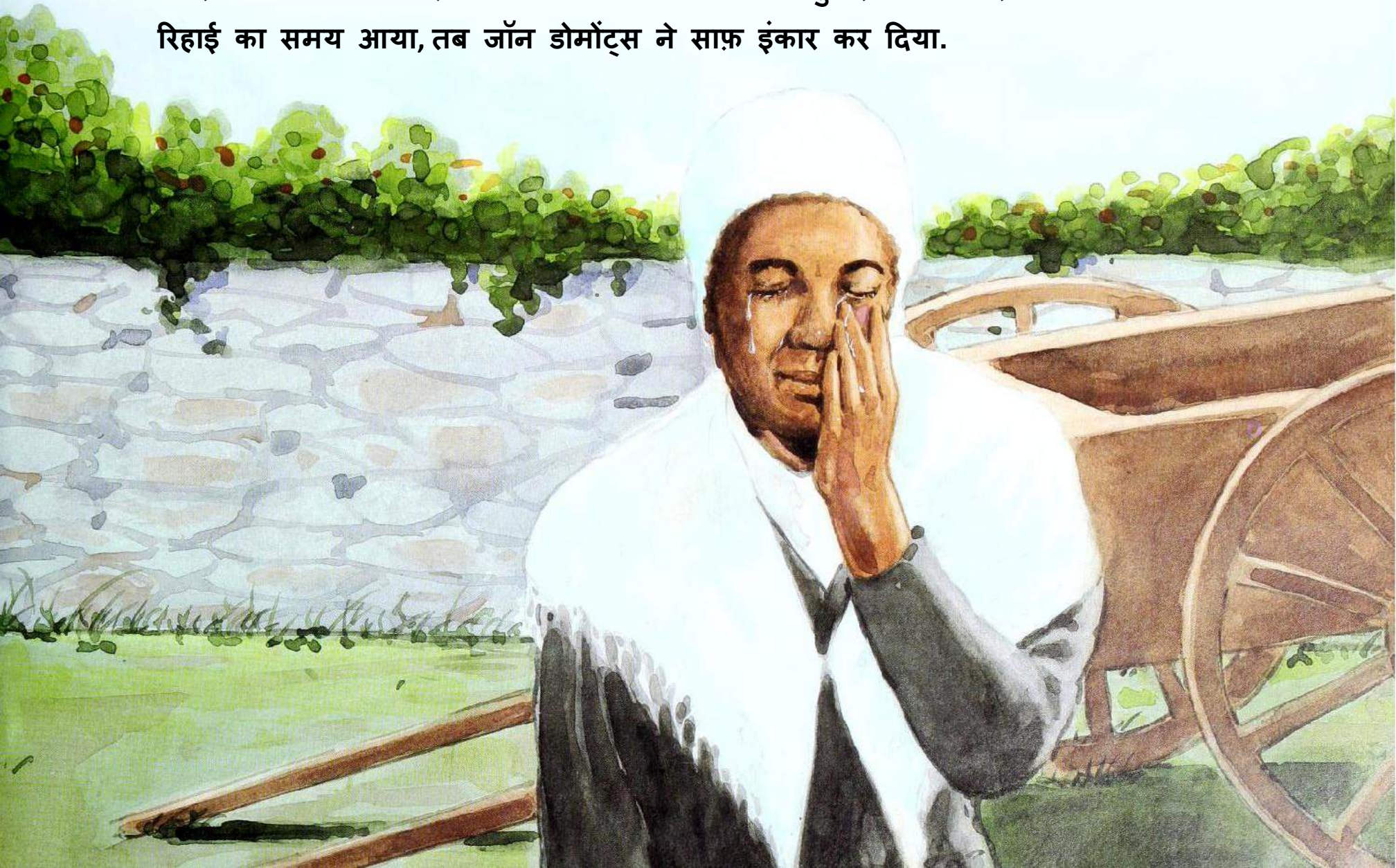




कुछ समय बाद इसाबेला, थॉमस से शादी करने के लिए सहमत हो गयी. थॉमस भी एक दास था जो डोमोंट्स के लिए काम करता था. डोमोंट्स ने इसाबेला और थॉमस को विवाह के लिए प्रोत्साहित किया ताकि उसके दासों की संख्या में वृद्धि हो. इसाबेला और थॉमस के पांच बच्चे हुए : डायना, एलिजाबेथ, , हन्ना, पीटर और सोफिया.

1817 में, न्यूयॉर्क राज्य में एक कानून पारित हुआ जिसके अनुसार दस वर्षों के बाद 4 जुलाई, 1827 को इसाबेला और अन्य सभी दासों को स्वतंत्रता मिलती. डोमोंट्स ने इसाबेला से वादा किया अगर वह कड़ी मेहनत से उसके लिए काम करती रहेगी तो वह उसे नौ साल यानी 4 जुलाई 1826 को ही मुक्त कर देगा.

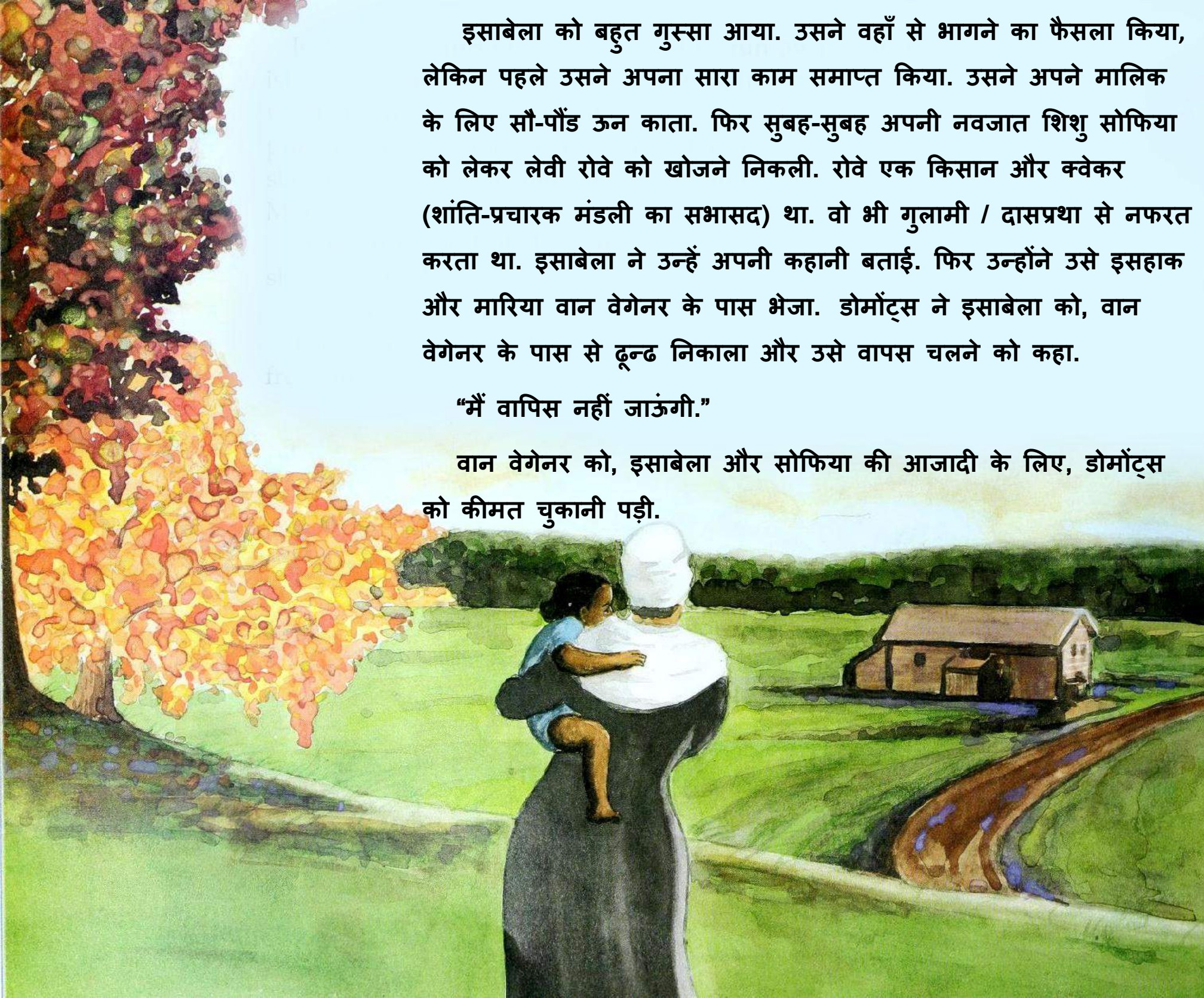
इसाबेला खेतों में कड़ी मेहनत से काम करती रही, जुताई और कटाई करती रही, लेकिन जब रिहाई का समय आया, तब जॉन डोमोंट्स ने साफ़ इंकार कर दिया.



इसाबेला को बहुत गुस्सा आया. उसने वहाँ से भागने का फैसला किया, लेकिन पहले उसने अपना सारा काम समाप्त किया. उसने अपने मालिक के लिए सौ-पौंड ऊन काता. फिर सुबह-सुबह अपनी नवजात शिशु सोफिया को लेकर लेवी रोवे को खोजने निकली. रोवे एक किसान और क्वेकर (शांति-प्रचारक मंडली का सभासद) था. वो भी गुलामी / दासप्रथा से नफरत करता था. इसाबेला ने उन्हें अपनी कहानी बताई. फिर उन्होंने उसे इसहाक और मारिया वान वेगेनर के पास भेजा. डोमोंट्स ने इसाबेला को, वान वेगेनर के पास से ढूँढ निकाला और उसे वापस चलने को कहा.

“मैं वापिस नहीं जाऊंगी.”

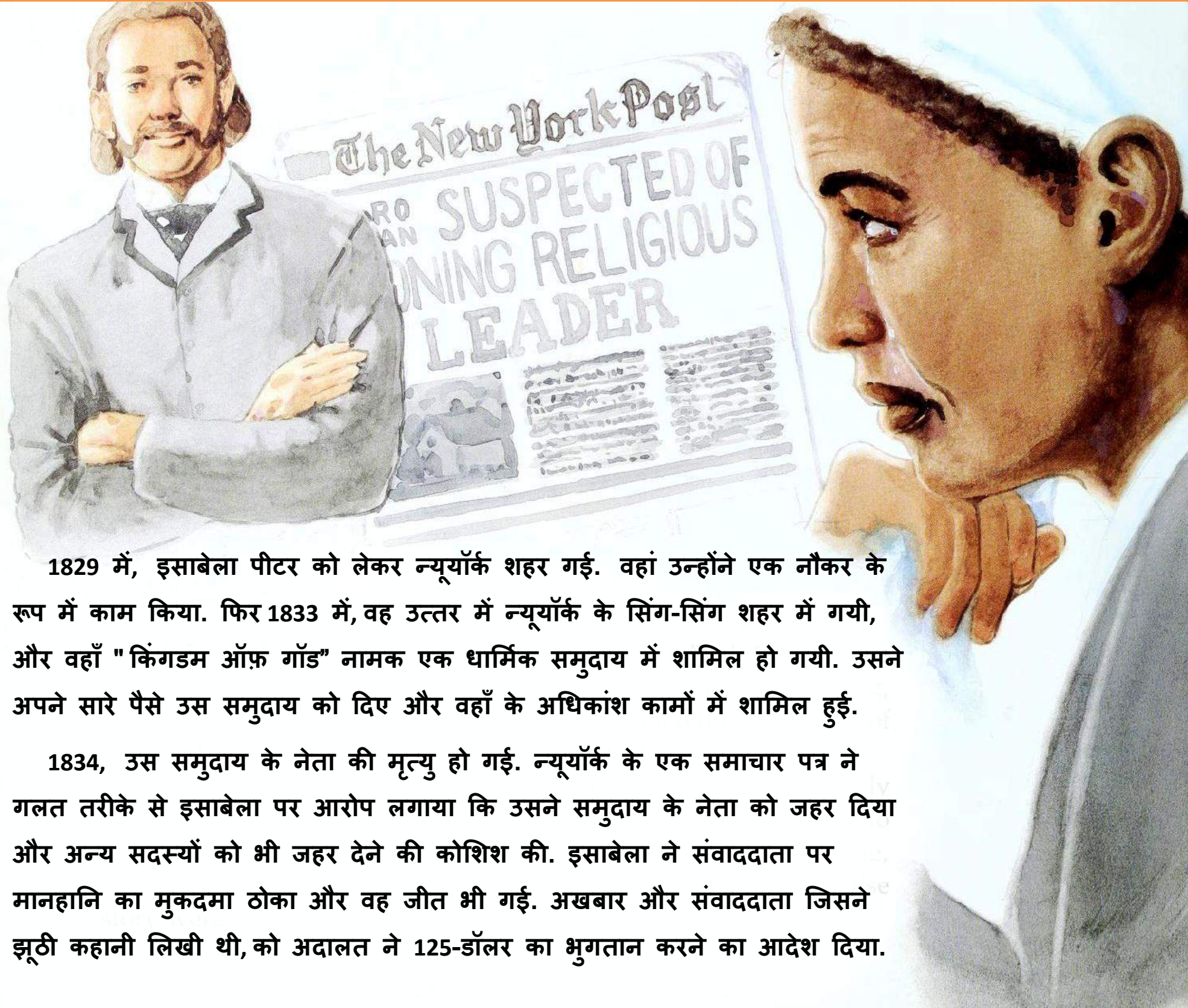
वान वेगेनर को, इसाबेला और सोफिया की आजादी के लिए, डोमोंट्स को कीमत चुकानी पड़ी.





1826 की सर्दियों तक इसाबेला ने, वान वेगेनर के घर काम किया. 1827 में, उसे पता चला की डोमोंट्स ने उसेक पांच वर्षीय बेटे, पीटर को, सोलोमन गेडेनी को बेंच दिया है, जिसने पीटर को न्यूयॉर्क राज्य के बाहर किसी अलाबामा प्लान्टर को बेंच दिया था. इस तरह राज्य के बाहर गुलामों की बिक्री, कानून के खिलाफ थी.

इसाबेला ने डोमोंट्स की पत्नी से कहा कि “मैं अपने बच्चे को वापस पा कर ही रहूंगी.” वह अदालत में गई. उसने गेडेनी पर मुकदमा चलाया और वह जीती. गोरी चमड़ीवालों के खिलाफ मुकदमा जीतनेवालों में इसाबेला, संयुक्त राज्य अमेरिका की पहली अफ्रीकी-अमेरिकी महिलाओं में से एक थी.



1829 में, इसाबेला पीटर को लेकर न्यूयॉर्क शहर गई. वहां उन्होंने एक नौकर के रूप में काम किया. फिर 1833 में, वह उत्तर में न्यूयॉर्क के सिंग-सिंग शहर में गयी, और वहाँ "किंगडम ऑफ़ गॉड" नामक एक धार्मिक समुदाय में शामिल हो गयी. उसने अपने सारे पैसे उस समुदाय को दिए और वहाँ के अधिकांश कामों में शामिल हुई.

1834, उस समुदाय के नेता की मृत्यु हो गई. न्यूयॉर्क के एक समाचार पत्र ने गलत तरीके से इसाबेला पर आरोप लगाया कि उसने समुदाय के नेता को जहर दिया और अन्य सदस्यों को भी जहर देने की कोशिश की. इसाबेला ने संवाददाता पर मानहानि का मुकदमा ठोका और वह जीत भी गई. अखबार और संवाददाता जिसने झूठी कहानी लिखी थी, को अदालत ने 125-डॉलर का भुगतान करने का आदेश दिया.

इसाबेला वापस न्यूयॉर्क शहर लौटी और फिर से एक नौकर के रूप में काम करने लगी. लेकिन वह वहां दुखी थी और उसने कहा, "अमीर, गरीबों को लूटते और गरीब एक-दूसरे को लूटते हैं." जून 1843 में उसने अपनी महिला मालिक से कहा, "मैं पश्चिम जा रही हूँ, क्योंकि आध्यात्म मुझे बुला रहा है, और मुझे वहां जाना ही होगा."



सोजॉर्नर ट्रुथ द्वारा
निःशुल्क व्याख्यान

FREE LECTURE
BY
SOJOURNER TRUTH

अलग-अलग स्थानों पर जाकर उपदेश देने की योजना के साथ-साथ उसने यह भी सन्देश दिया कि वो अब इसाबेला नहीं, सोजॉरनर थी. उसने भगवान - यीशू को अपना एकमात्र स्वामी माना और क्योंकि उनका नाम सच (ट्रुथ) था, तब उसने लोगों से उसे भी ट्रुथ बुलाने को कहा. सोजॉरनर ने अपनी यात्रा में कई राज्यों में हजारों मील की यात्रा की. उसने धर्म का प्रचार किया, गुलामी की खिलाफत की और महिलाओं के अधिकारों के लिए कड़ी मेहनत की. हास्य, सामान्य ज्ञान और विचारों की शक्ति ने उसे, अपने समय का एक महान वक्ता बनाया. सोजॉरनर ट्रुथ, पढ़-लिख नहीं सकती थी, लेकिन वो जहां भी वह जाती, दासप्रथा के विरोधी नेता भी उनकी बात सुनते. वह दिल से बाइबल के बारे में बहुत कुछ जानती थीं, "मैं भगवान से बात करती हूँ और भगवान मुझ से."





एक महिला ओहियो में उसके भाषण सुनती थी. उसने सोर्जॉर्नर डुथ के बारे में लिखा कि “वो लगभग छह फीट ऊंची थीं, तना हुआ सिर और आकाश को भेदने वाली आंखें, जैसे किसी ने उन्हें सपने में देखा हो. गंभीर चेहरा. गंभीर स्वर में बोलना, हालांकि ज़ोर से नहीं, पर हर घर तक पहुँचने वाली आवाज.”

सोर्जॉर्नर डुथ ने दासप्रथा के मालिकों को पापी बुलाया. उन्हें जल्द ही परमेश्वर कठोर दंड देगा. सोर्जॉर्नर डुथ, लोगों के इस विचार पर हँसती थी कि महिलाएं पुरुषों की तुलना में कमजोर थीं. उन्होंने कहा “मुझे देखो” मैंने खेतीबाड़ी की है. और क्या मैं एक महिला नहीं हूँ? उन्होंने अपनी आस्तीन को खींचकर अपने मजबूत हाथों को दिखाया. उसने कहा “बहनों अगर महिलाओं को उनके अधिकार चाहिए तो वे उन्हें डटकर, लड़कर लेना चाहिए, सिर्फ बातें ही नहीं करनी चाहिए.”



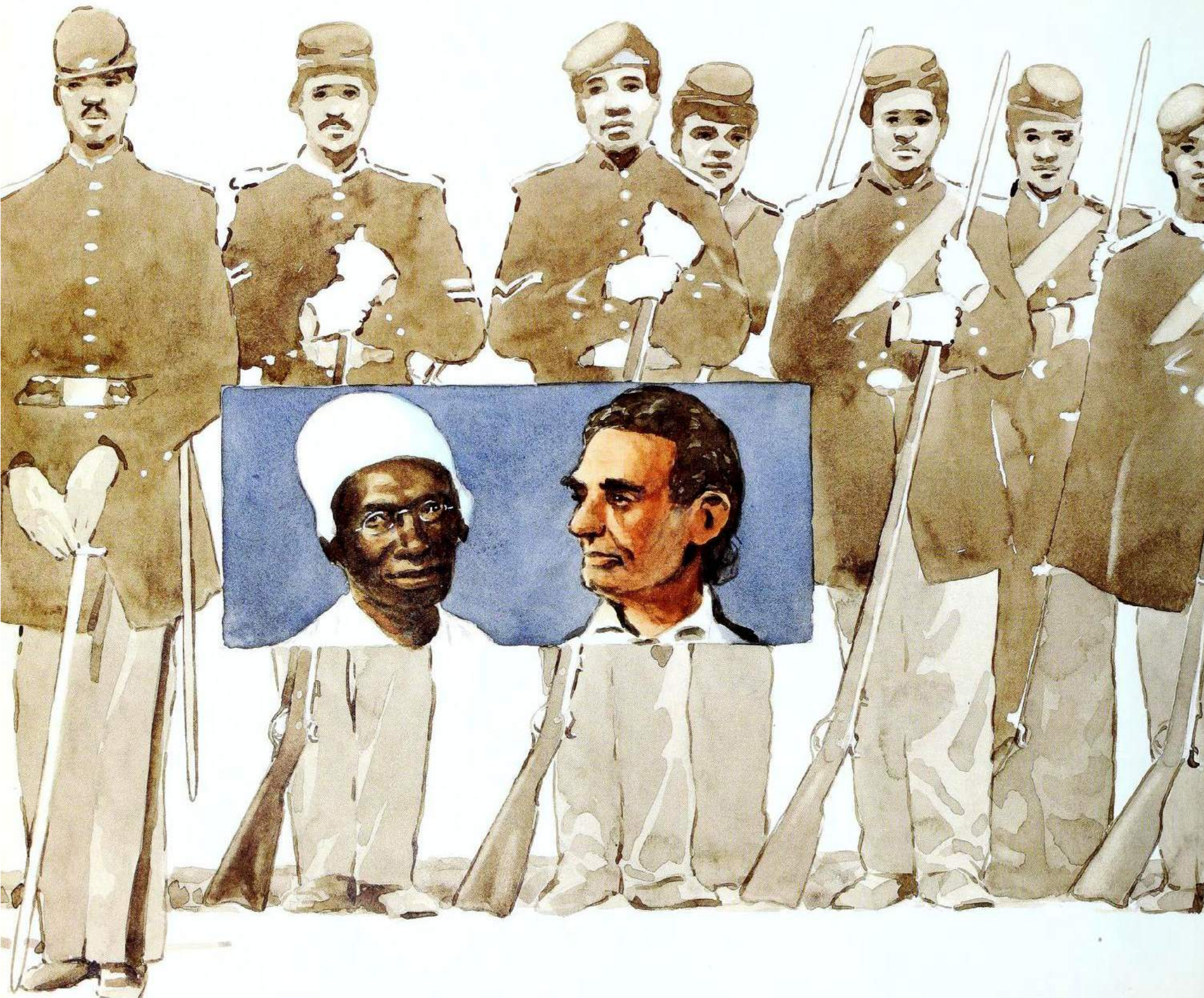


1849 में सोजॉरनर ट्रुथ अपने पुराने मालिक जॉन डोमोंट्स का मिलने गईं. “गुलामी के दिनों में भी ऐसे कुछ अच्छे लोग थे जिन्होंने इसके खिलाफ आवाज उठाई थी,” डोमोंट्स ने कहा, “पर अब कई लोग दासप्रथा की भयावहता के बारे में भाषण देते हैं, जिसमें सोजॉरनर ट्रुथ भी शामिल हैं.” जॉन डोमोंट्स ने कहा कि “गुलामी दुनिया में सबसे बुरी चीज थी, पृथ्वी का सबसे बड़ा शाप थी.” सोजॉरनर ने बाद में डोमोंट्स को अपना भाई बुलाया.

सोजॉरनर डुथ ने अपने दोस्त ओलिव गिल्बर्ट को अपने जीवन की कहानी बताई और उन्होंने उसके ऊपर एक किताब लिखी. 1850 में, सोजॉरनर डुथ की कथा *(नैरेटिव ऑफ़ सोजॉरनर डुथ)* प्रकाशित हुई. अपनी किताब की प्रतियां बेचने से अर्जित किए धन को उन्होंने अपनी यात्रा के लिए इस्तेमाल किया.

1857 में, सोजॉरनर डुथ ने बैटल क्रीक, मिशिगन के निकट अपने बच्चों और नाती-पोतों के साथ रहने लिए एक घर खरीदा.







1861 में, गृहयुद्ध शुरू हुआ. यह युद्ध, दासप्रथा खत्म करने और पूरे राष्ट्र को जोड़ने के लिए था. सोर्जॉर्नर ड्यूथ ने अफ्रीकी-अमेरिकी सैनिकों की खाद्य-सामग्री के लिए पैसे एकत्र किए. उन्होंने, उन गुलाम रह चुके सैनिकों का खास ध्यान रखा जो स्वतंत्रता के लिए उत्तर की ओर गए.

1864 में, युद्ध के दौरान, वह राष्ट्रपति लिंकन से मिलने गईं. उन्होंने बाद में कहा, "मुझे इस पर गर्व है. मैंने कभी भी किसी महान व्यक्ति से अच्छे बर्ताव की अनुभूति महसूस नहीं की थी. पर अब्राहम लिंकन ने मुझसे बहुत अच्छा व्यवहार किया... उनसे मिलना मुझे एक दोस्त से मिलने जैसा लगा." सोर्जॉर्नर ड्यूथ ने लिंकन को बताया कि वो अब तक के सभी राष्ट्रपतियों में, सबसे अच्छे थे.



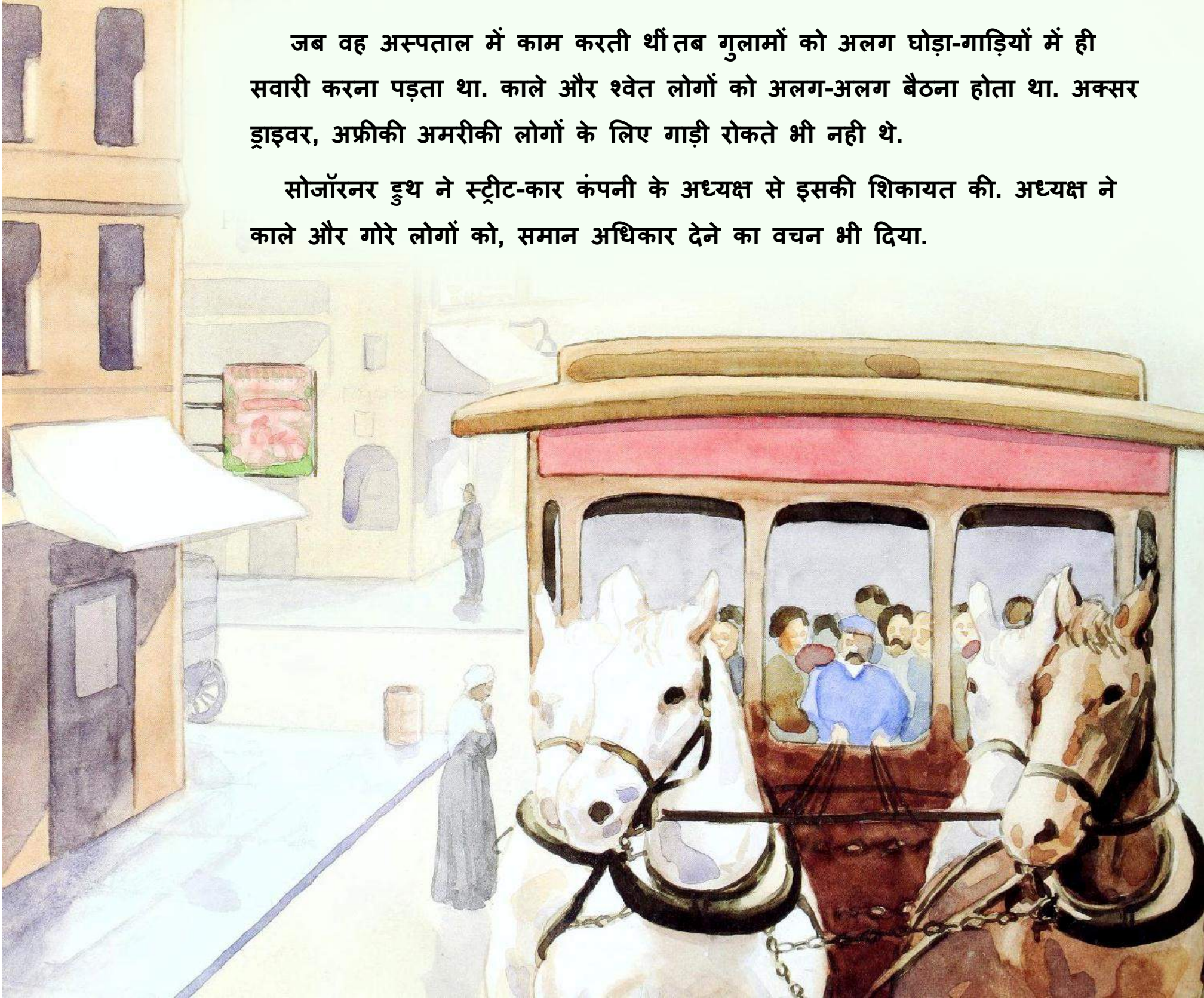
जब वह वाशिंगटन डी.सी. पहुंचीं तब गुलाम व्यापारी मैरीलैंड में काम किया करते थे।
सोजॉरनर डुथ ने यूनियन सैनिकों को इकट्ठा करके वहां गुलामी के व्यापार को नष्ट किया।

1864 में सोजॉरनर डुथ ने, वर्जीनिया के अलिंग्टन-हाइट्स में, दासों को मुक्त करने के लिए उन्हें काउंसलर के रूप में नियुक्त किया। उन्होंने फ्रीडमैन, अस्पताल में भी काम किया।



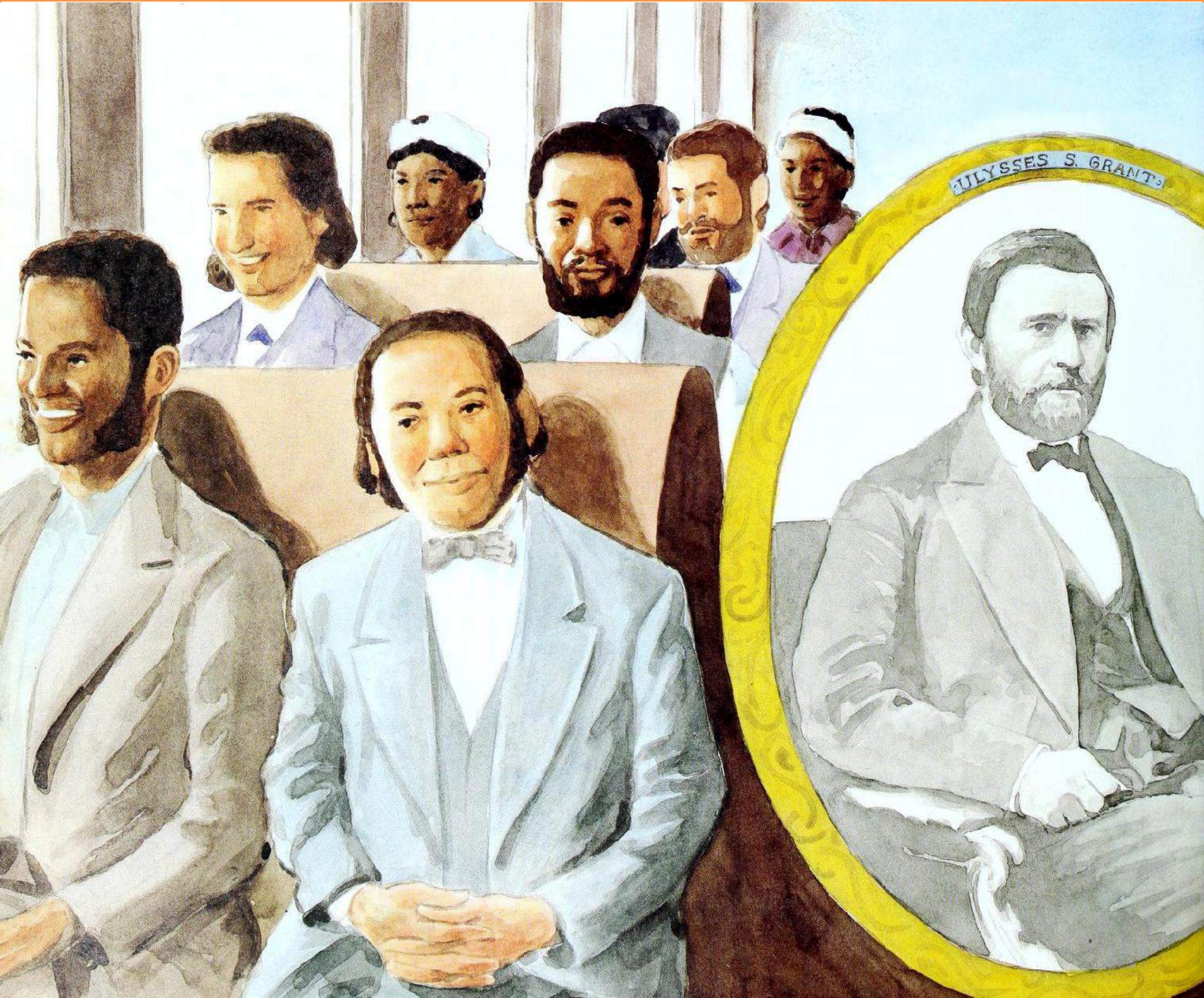
जब वह अस्पताल में काम करती थीं तब गुलामों को अलग घोड़ा-गाड़ियों में ही सवारी करना पड़ता था. काले और श्वेत लोगों को अलग-अलग बैठना होता था. अक्सर ड्राइवर, अफ्रीकी अमरीकी लोगों के लिए गाड़ी रोकते भी नहीं थे.

सोजॉर्नर डुथ ने स्ट्रीट-कार कंपनी के अध्यक्ष से इसकी शिकायत की. अध्यक्ष ने काले और गोरे लोगों को, समान अधिकार देने का वचन भी दिया.



फिर एक दिन एक स्ट्रीटकार चालक ने उनके लिए गाड़ी रोकने से मना किया. सोजॉरनर डुथ, उस चालक को रोकने के लिए उसकी गाड़ी के सामने खड़ी हो गईं. जब सोजॉरनर डुथ उस गाड़ी में जबरन सवार हुईं तो कंडक्टर ने उनसे कहा, “आगे जाओ और जहां घोड़े हैं वहाँ जाकर बैठो नहीं तो मैं तुम्हें बाहर निकाल दूंगा.” सोजॉरनर डुथ ने वहां बैठने से इंकार कर दिया. वो वहीं बैठीं जहां वो चाहती थीं.





जब दूसरे कंडक्टर ने उन्हें धक्का दिया, तो सोर्जॉनर डुथ ने उसे गिरफ्तार करवाया. बाद में उन्होंने कहा कि उनकी इस खिलाफत से बहुत खलबली पैदा हुई. रंग भेद समाप्त होने से बाद गाड़ियां अंदर से काली मिर्च और नमक जैसी दिखने लगीं - क्योंकि अब काले और गोरे लोग एक-साथ बैठने लगे थे.

युद्ध समाप्त होने के बाद, सोर्जॉनर डुथ ने राष्ट्रपति यूलेसस एस. ग्रांट और कांग्रेस के साथ बातचीत की. उन्होंने उनके सामने एक प्रस्ताव रखा कि मुक्त गुलामों को पश्चिम में जमीन दी जाए ताकि वे स्वयं के लिए काम कर सकें. परन्तु इस योजना को कभी भी अपनाया नहीं गया.

1870 के दशक में मुक्त गुलाम बेरोजगारी और भयानक गरीबी को झेल रहे थे.



जल्द ही सोजॉरनर ट्रुथ को एहसास हुआ कि गुलामी से मुक्ति का मतलब गरीबी, घृणा और भेदभाव से आजादी मिलना नहीं था. सोजॉरनर ट्रुथ ने सभी लोगों - काले और सफेद पुरुषों और महिलाओं के लिए समानता का सपना देखा था.

26 नवंबर 1883 को, सोजॉरनर ट्रुथ की मृत्यु हुई. उनका सपना अभी भी पूरा नहीं हुआ था. लेकिन वह एक बहादुर, निष्कपट, स्पष्टवादी महिला थीं जिन्होंने एक महत्वपूर्ण संघर्ष में हिस्सा लिया था.



लेखक का नोट

अधिकांश दासों के जन्म का कोई रिकॉर्ड नहीं रखा जाता था, इसलिए **सोजॉरनर डुथ** के जन्म की सही तारीख भी अज्ञात है. यहां तक कि वर्ष भी निश्चित तौर पर नहीं पता है. सोजॉरनर डुथ के प्रारंभिक जीवन के बारे में भी निश्चित जानकारी नहीं हैं. यहां तक कि मैंने बहुत सारी जानकारी सोजॉरनर डुथ की आत्मकथा से ली है जो की पहली बार 1850 में प्रकाशित हुई थी, और **बुक ऑफ़ लाइफ़** जिसमे सोजॉरनर डुथ के पत्र और जीवन स्केच का संग्रह है 1878 में प्रकाशित हुई.

उस कथा में उन्होंने खुद को 1843 से पहले इसाबेला के रूप में संदर्भित किया, बेला या सोजॉरनर, इसलिए मैंने भी वैसे ही लिखा है.

सोजॉरनर डुथ ने जो भाषा पहली बार सीखी वह डच थी, जो उनके पहले मालिक जोहान्स हार्डेबेर्ग द्वारा बोली जाती थी. उन्होंने अंग्रेजी भाषा तब सीखी जब वह जॉन नीली की दास थी.

सोजॉरनर डुथ अपने साथ एक कॉपी रखती थी जिसमें उन्होंने मिलने के बाद कई महान लोगों के ऑटोग्राफ एकत्रित किये थे. उन्होंने बाद में कहा कि राष्ट्रपति लिंकन ने “मेरी छोटी किताब ली और उसी हाथ से गुलामी-समाप्ति के कानून पर हस्ताक्षर किए.” राष्ट्रपति लिंकन ने लिखा, “आंटी सोजॉरनर डुथ - 29 अक्टूबर, 1864 - ए लिंकन.” मुफ्त व्याख्यान के लिए पैसा जमा करने के लिए सोजॉरनर डुथ ने अपनी तस्वीरें बेंची जिन पर यह शीर्षक था – “मैं उजाला लाने के लिए इस अँधेरे को बेंच रही हूँ - सोजॉरनर डुथ.”

महत्वपूर्ण तिथियाँ

1797	हर्ली, न्यूयॉर्क में जन्म
1806	जॉन नीली को बेंचा जाना
1808	जॉन डुमॉन्ट को बेंचा जाना
1817	में न्यूयॉर्क में कानून पास - जुलाई 4, 1927 को सभी दासों को स्वतंत्रत किया जाएगा
1818	डोमोंट्स के खेत से भाग जाना
1833-1834	सिंग-सिंग न्यूयॉर्क के किंगडम ऑफ़ गॉड में रहना
1843	न्यूयॉर्क शहर छोड़कर अपनी यात्रा शुरू करना और खुद को सोर्जॉनर डुथ का नाम देना
1850	सोर्जॉनर डुथ की कथा का प्रकाशन
1852	एकॉन ओहियो में भाषण देना
1857	मिशिगन में स्थानांतरण
1861-1865	गृह युद्ध
1864	राष्ट्रपति अब्राहम लिंकन से मिलना
1865	में तेरहवें संशोधन यू.एस. संयुक्त राज्यों में सभी दासों को मुक्त करने के लिए संविधान की पुष्टि
1870	राष्ट्रपति यूलिसिस से अनुदान मिलना
1875	द बुक ऑफ़ लाइफ़ का प्रकाशन
1883	26 नवंबर को, बैटल क्रीक मिशिगन में मृत्यु